साँची स्तूप: अशोक काल से वर्तमान तक का सफर

प्रिलिम्स के लिये:

साँची स्तूप का पूर्वी द्वार, साँची स्तूप, तोरण, बुद्ध, सातवाहन राजवंश, जातक कथाएँ, शालभंजिका, मानुषी बुद्ध, ज्ञानोदय, शुंग काल, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

मेन्स के लिये:

भारत के विरासत स्थलों का महत्त्व और संरक्षण, बौद्ध धर्म

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के विदेश मंत्री ने जर्मनी के बर्लिन में **हम्बोल्ट फोरम संग्रहालय के** सामने स्थित साँची स्तूप के पूर्वी द्वार की **प्रतिकृति का दौरा किया।**

- यह मूल संरचना की **1:1 प्रतिकृति है, जो लगभग 10 मीटर ऊँचा और 6 मीटर चौड़ा है** तथा इसका वज़न लगभग 150 टन है।

साँची स्तूप के पूर्वी द्वार से यूरोप की यात्रा

- साँची स्तूप के पूर्वी **द्वार का** प्लास्टर **लेफ्टिनेंट हेनरी हार्डी कोल द्वारा 1860 के दशक के अंत** में **विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय** के लिये किया गया था।
- **बाद में इस ढाँचे की कई प्रतियाँ बनाई गईं** और पूरे यूरोप में प्रदर्शित की गईं।
  - मूल द्वार की एक प्लास्टर कास्ट प्रतिकृति वर्ष **1886** से **कोनिग्लिचेस संग्रहालय फर वोल्करकुंडे बर्लिन** के प्रवेश कक्ष में **प्रदर्शित किया गया था।**
    - इस संरक्षित प्रति की एक कास्ट वर्ष **1970 में कृत्रिम पत्थर से बनाया गई थी।**
- **नवीनतम बर्लिन प्रतिकृति का भी उद्गम इसी मूल ढाँचे से माना जाता है।**
  - **इसे 3डी स्कैनिंग**, आधुनिक रोबोट, कुशल जर्मन और भारतीय मूर्तिकारों तथा सहायता के लिये **मूल तोरण के विस्तृत चित्रों** की सहायता से बनाया गया था।

साँची स्तूप के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **साँची स्तूप का निर्माण:** इसका निर्माण **अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व** में करवाया था।
  - इसके निर्माण की देखरेख **अशोक की पत्नी देवी ने की थी,** जो पास के व्यापारिक शहर **विदिशा से थीं।**
  - साँची परिसर के विकास को विदिशा के **व्यापारिक समुदाय से संरक्षण प्राप्त हुआ।**
- **विस्तार: दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (शुंग काल)** के दौरान, स्तूप को बलुआ पत्थर की पट्टियों, एक **परिक्रमा पथ** और एक **छत्र (छाता)** के साथ एक **हर्मिका के साथ विस्तारित किया गया था।**
  - **पहली शताब्दी ईसा पूर्व** से **दूसरी शताब्दी ईस्वी तक** चार पत्थर के प्रवेश द्वार या **तोरण बनाए गए, जो** बौद्ध प्रतिमा विज्ञान और कहानियों को दर्शाती विस्तृत नक्काशी से सुसज्जित थे।
- **साँची स्तूप की पुनः खोज: वर्ष 1818 में जब** ब्रिटिश अधिकारी **हेनरी टेलर ने इसकी खोज की** थी तब यह पूरी तरह खंडहर अवस्था में था।
  - **अलेक्जेंडर कनिंघम ने वर्ष 1851** में साँची में **प्रथम औपचारिक सर्वेक्षण और उत्खनन का** नेतृत्व किया।
- **संरक्षण के प्रयास:** वर्ष **1853** में भोपाल की सिकंदर बेगम ने **महारानी विक्टोरिया** को साँची के प्रवेशद्वार भेजने की पेशकश की, लेकिन वर्ष **1857 के विद्रोह** और परिवहन संबंधी समस्याओं के कारण प्रवेशद्वार हटाने की योजना में देरी हुई।
  - वर्ष 1868 में बेगम ने फिर से प्रस्ताव दिया, लेकिन औपनिवेशिक अधिकारियों ने इसे अस्वीकार कर दिया और **यथास्थान संरक्षण का**

विकल्प चुना। इसके बजाय पूर्वी प्रवेशद्वार का **प्लास्टर कास्ट बनाया गया।**
- इस स्थल को इसकी वर्तमान स्थिति में 1910 के दशक में [भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण](#) **(ASI) के** महानिदेशक **जॉन मार्शल द्वारा** निकटवर्ती भोपाल की बेगमों से प्राप्त धनराशि से पुनः स्थापित किया गया था।
  - **मार्शल के प्रयासों से वर्ष 1919 में** उस स्थान पर कलाकृतियों को संरक्षित करने और संरक्षण का प्रबंधन करने के लिये एक संग्रहालय का निर्माण किया गया।

- **साँची स्तूप की वास्तुकला:**
  - **अण्ड:** यह धरती पर बना एक **अर्द्धगोलाकार टीला है।**
  - **हर्मिका:** टीले के ऊपर **चतुर्भुज रेलिंग है। ऐसा माना जाता है कि यह भगवान का निवास स्थान है।**
  - **छत्र:** यह गुम्बद के शीर्ष पर बनी **छतरी है।**
  - **यष्टि:** यह **केंद्रीय स्तंभ है,** जो छत्र नामक तिहरे छत्रनुमा संरचना को सहारा देता है।
  - **रेलिंग:** यह **स्तूप के चारों ओर लगी होती है,** पवित्र क्षेत्र को सीमांकित करती है तथा पवित्र स्थान और बाहरी वातावरण के बीच एक भौतिक सीमा प्रदान करती है।
  - **प्रदक्षिणापथ (परिक्रमा पथ): यह स्तूप के चारों ओर** एक पैदल मार्ग है, जो भक्तों को पूजा के रूप में दक्षिणावर्त दिशा में चलने की अनुमति देता है।
  - **तोरण:** [तोरण](#) बौद्ध स्तूप वास्तुकला में एक स्मारकीय **प्रवेश द्वार या प्रवेश संरचना है।**
  - **मेधी:** यह उस **आधार को संदर्भित करता है,** जो एक मंच बनाता है जिस पर स्तूप की मुख्य संरचना खड़ी होती है।

//
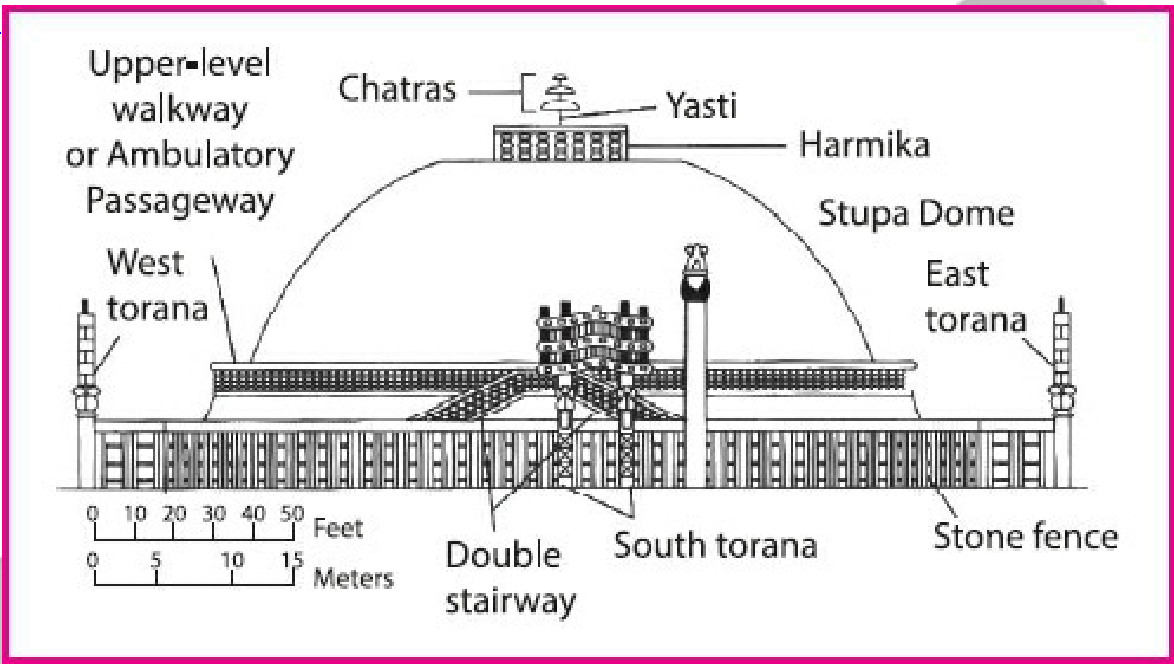

- **यूनेस्को मान्यता:** साँची स्तूप को वर्ष 1989 में [यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल](#) **के रूप में अंकित किया गया था।**

साँची स्तूप के प्रवेशद्वार की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- **निर्माण:** चार दिशाओं की ओर उन्मुख चार प्रवेशद्वार (तोरण) का निर्माण पहली शताब्दी ईसा पूर्व में किया गया **था।**
  - **सातवाहन राजवंश के शासन** के दौरान कुछ दशकों की अवधि में प्रवेशद्वारों का निर्माण किया गया था।
- **संरचना : ये प्रवेशद्वार दो वर्गाकार स्तंभों** से बने हैं, जो सर्पिलाकार किनारे वाले **तीन घुमावदार वास्तुशिल्प (या बीम) से** युक्त एक अधिरचना को सहारा देते हैं।
- **उत्कीर्णन:** स्तंभों और वास्तुशिल्प को सुंदर **उभरी हुई आकृतियों तथा मूर्तियों से सुसज्जित किया गया है, जिनमें बुद्ध के जीवन** के दृश्य, **जातक कथाओं** एवं अन्य बौद्ध प्रतिमाओं को दर्शाया गया है।
  - इसमें **शालभंजिका** (एक प्रजनन प्रतीक जिसे वृक्ष की शाखा को पकड़ती हुई **यक्षी द्वारा दर्शाया गया है), हाथी, पंख वाले शेर और मोर शामिल हैं।**
  - हालाँकि ये द्वार **बुद्ध के मानव रूप** का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।
- **दार्शनिक महत्त्व:** तीन घुमावदार **आर्किट्रेव (या बीम)** का निम्नलिखित दार्शनिक महत्त्व है।
  - **ऊपरी प्रस्तरपाद:** यह **सात मानुषी बुद्धों** (बुद्ध के पिछले अवतार) का प्रतिनिधित्व करता है।
  - **मध्य वास्तुशिल्प: इसमें महाप्रयाण** के दृश्य को दर्शाया गया है, जब राजकुमार सिद्धार्थ **ज्ञान की** खोज में एक तपस्वी के रूप में रहने के लिये **कपिलवस्तु छोड़ देते हैं।**
  - **निचला प्रस्तरपाद:** इसमें **सम्राट अशोक को बोधि वृक्ष के** पास जाते हुए दिखाया गया है जिसके नीचे **बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।**

नषि्करष

साँची सतूप प्राचीन बौद्ध वासतुकला और भकत‍ि का एक समारकीय प्रमाण है। **यूनेसको वशि्व धरोहर सथल** के रूप में, सतूप अतीत को समकालीन वैशवकि प्रशंसा के साथ जोड़ते हुए, शरद्धा एवं वद्वािनों की रुच‍ि को प्रेरति करता है। वर्तमान उदाहरण, जैसे जरमनी द्वारा साँची सतूप के पूरवी द्वार की प्रतकृित‍ि का नरि्माण, ऐसे समारकों को संरकषति करने के सार्वभौमकि मूलय को रेखांकति करता है।

[illegible]:

प्रशन: साँची सतूप के सथापत्य वकिास और ऐतहिासकि महतत्व पर चरचा कीजिये।

UPSC सवििल सेवा परीक्षा, वगित वरष के प्रशन

प्रलिम्स

प्रश्न. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थानों पर विचार कीजिये: (2013)

1. अजंता की गुफाएँ
2. लेपाक्षी मंदिर
3. साँची स्तूप

उपर्युक्त स्थानों में से कौन-सा/से भित्ति चित्रों के लिये भी जाना जाता है/जाने जाते हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) 1, 2 और 3
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

प्रश्न: कुछ बौद्ध रॉक-कट गुफाओं को चैत्य कहा जाता है, जबकि अन्य को विहार कहा जाता है। दोनों के बीच क्या अंतर है? (2013)

(a) विहार पूजा स्थल होता है, जबकि चैत्य बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है।
(b) चैत्य पूजा स्थल होता है, जबकि बिहार बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है।
(c) चैत्य गुफा के दूर के सिरे पर स्तूप होता है, जबकि विहार गुफा पर अक्षीय कक्ष होता है।
(d) दोनों में कोई वस्तुपरक अंतर नहीं होता।

उत्तर: (b)

?????

प्रश्न. भारतीय दर्शन और परंपरा ने भारतीय स्मारकों की कल्पना तथा आकार देने एवं उनकी कला में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चर्चा कीजिये। (2020)

प्रश्न. प्रारंभिक बौद्ध स्तूप कला, लोक वर्ण्य विषयों और कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। विशदीकरण कीजिये। (2016)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/journey-of-sanchi-stupa-to-europe-1